डॉ. नवीन नंदवाना

जन्म : 22 जुलाई, 1977

शिक्षा : एम.ए. (हिंदी एवं इतिहास), पीएच.डी., स्लेट, बी.एड., बी.जे.एम.सी.

प्रकाशित पुस्तकें : रचनाकार धर्मवीर भारती : एक पुनर्मूल्यांकन, संत दादूदयाल : जीवन और साहित्य, हिंदी कविता : समय का शाब्दिक दस्तावेज, काव्यांग-प्रभा, छायावाद : एक पुनर्विचार, आधुनिक कविता : धार एवं धरातल, समकालीन हिंदी कविता : विविध संदर्भ, समकालीन हिंदी नाटक : समय और संवेदना, नई सदी का साहित्य : चिंतन और चुनौतियाँ, ध्वनि सिद्धांत : एक नया मूल्यांकन, आदिवासी समाज, संस्कृति और साहित्य, साहित्य, कला एवं संस्कृति के उन्नयन में मीडिया का योगदान, हिंदी व्याकरण एवं रचना प्रबोध (माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान के लिए लेखन), आधुनिक काव्यधारा, निबंध स्तबक, 21वीं सदी का हिंदी उपन्यास।

शोध पत्रिका : 'समवेत' नामक अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका का वर्ष 2013 से नियमित संपादन।

अन्य : विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में शोध आलेख, कविता और कहानी प्रकाशन। शताधिक व्याख्यान एवं शोध पत्र प्रस्तुति।

सम्मान : श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी राष्ट्रीय सम्मान, नाना भाई खाँट शिक्षक गौरव सम्मान, श्रीमती सरबती देवी गिरधारीलाल सिहाग साहित्य सम्मान, विश्व हिंदी सेवी सम्मान।

संप्रति : सह आचार्य, हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज) 313001

संपर्क : ए-जी-9, रामेश्वरम् अपार्टमेंट, हनुमान नगर, मनवाखेड़ा, उदयपुर (राज.) 313003

दूरभाष : 09828351618, 09462751618

e-mail : nandwana.nk@gmail.com

₹ 595.00

हिमांशु पब्लिकेशन्स

21वीं सदी का हिंदी उपन्यास

नंदवाना

21वीं सदी का हिंदी उपन्यास

संपादक
डॉ. नवीन नंदवाना

21वीं सदी का हिंदी उपन्यास

संपादक
डॉ. नवीन नंदवाना

हिमांशु पब्लिकेशन्स
उदयपुर ❑ नई दिल्ली

मुद्रणाधिकार ©

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी रूप में प्रतिकृति करना या किसी भी साधन-इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल या अन्य प्रकार जैसे फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या सूचना संचयन और पुनः प्राप्ति पद्धति द्वारा प्रसारित करना संपादक / प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना मना है।

HIMANSHU Publications

हिमांशु पब्लिकेशन्स

464, हिरण मगरी, सेक्टर 11, उदयपुर 313 002 (राज.), फोन: 0294-2421087
4379/4-B, प्रकाश हाउस, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2, मोबाइल: 96109-73739
Web : *himanshupublications.com;* email : *himanshupublications@gmail.com*

ISBN : 978-81-7906-962-2
संस्करण : 2022
मूल्य : ₹ 595.00

Distributor
ARYAS PUBLISHERS DISTRIBUTORS (P) LTD.
2-D, Hazareshwar Colony, Near Court Choraha, Udaipur (Raj.) - 313 001; Phone : 0294-2526160
E-mail : apdpl.2012@gmail.com

संपादक की कलम से...

उपन्यास हिंदी गद्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। इसे लोकप्रिय और बहुपठनीय विधा भी कहा जा सकता है। हिंदी उपन्यास विधा ने आज लगभग एक शताब्दी से भी अधिक वर्षों की यात्रा पूरी कर ली है। अपनी इस लंबी यात्रा में सदैव इस विधा ने अपनी जनपक्षधरता सिद्ध की है साथ ही समय-काल के अनुसार समाज की विविध दशाओं के चित्रण में समर्थ होकर पाठकों की एक लंबी संख्या भी तैयार की है। उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द ने उपन्यास के विषय में कहा है कि- ''मैं उपन्यास को मानव जीवन का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्त्व है।'' और यह कार्य हिंदी उपन्यासकारों ने पूरी तन्मयता और ईमानदारी के साथ किया है।

हिंदी के प्रथम उपन्यास को लेकर विद्वानों ने अपने-अपने मत दिए हैं। कुछ विद्वान श्रद्धाराम फुल्लौरी द्वारा रचित 'भाग्यवती' (1877) नामक उपन्यास को हिंदी का प्रथम उपन्यास मानते हैं तो वहीं कुछ अन्य विद्वानों का मत है कि उपन्यास की कसौटी को ध्यान में रखकर बात की जाए तो लाला श्रीनिवासदास द्वारा रचित 'परीक्षा गुरु' (1882) को हिंदी का प्रथम उपन्यास माना जा सकता है। अधिकांश विद्वान इसी द्वितीय मत के समर्थन में ही हैं। इस मत को भी आधार माने तो हिंदी उपन्यास की उम्र एक सौ तीस से भी अधिक वर्षों की हो चुकी है। इस लंबी अवधि में हिंदी उपन्यास ने कई मोड़ देखे। अपने उन अनुभवों को साथ रखते हुए रचनाकारों ने जीवन व जगत् के कई विषयों पर अपनी कलम चलाई।

प्रेमचंद पूर्व युग की बात की जाए तो लाला श्रीनिवासदास, किशोरीलाल गोस्वामी, बालकृष्ण भट्ट, ठाकुर जगन्मोहन सिंह, राधाकृष्णदास, लज्जाराम शर्मा, देवकीनंदन खत्री और गोपालराम गहमरी के नाम लिए जा सकते हैं जिन्होंने सामाजिक, ऐतिहासिक, रोमानी, तिलस्मी-ऐयारी और जासूसी विषयों को आधार बनाकर लेखन किया। इस युग में बालकृष्ण भट्ट ने 'नूतन ब्रह्मचारी', 'सौ अजान एक सुजान', राधाकृष्णदास ने 'निस्सहाय हिंदू', किशोरीलाल गोस्वामी ने 'त्रिवेणी वा सौभाग्यश्रेणी' व 'लवंगलता' की रचना की। इस काल के प्रमुख उपन्यासकारों में देवकीनंदन खत्री का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। अपने उपन्यास 'चंद्रकांता' और 'चंद्रकांता संतति' से उन्होंने बहुत ख्याति अर्जित की। साथ ही इनसे हिंदी उपन्यास भी लोकप्रिय हुआ। 'चंद्रकांता संतति' के लिए तो प्रसिद्ध ही है कि इस उपन्यास को पढ़ने के लिए कितने ही लोगों ने हिंदी सीखी। वैसे यह हिंदी उपन्यास का प्रारंभिक दौर था।

प्रेमचंद युग को तो हिंदी उपन्यासों की दृष्टि से श्रेष्ठ युग कहा जा सकता है। यहाँ तक आते-आते हिंदी उपन्यास की दिशा ही बदल गई। उपन्यास सम्राट प्रेमचंद ने 'सेवासदन', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'निर्मला', 'गबन', 'कर्मभूमि' और 'गोदान' नामक उपन्यासों की रचना की। 'गोदान' न केवल प्रेमचंद का बल्कि संपूर्ण उपन्यास विधा में अपनी एक विशेष पहचान रखता है। इस काल में विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' ने 'माँ' और 'भिखारिणी', चतुरसेन शास्त्री ने 'हृदय की परख', शिवपूजन सहाय ने 'देहाती दुनिया', उग्र जी ने 'दिल्ली का दलाल', 'बुधुआ की बेटी', जयशंकर प्रसाद ने 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' नामक उपन्यासों की रचना की। इस युग में भगवतीचरण वर्मा, वृंदावनलाल वर्मा, राहुल सांकृत्यायन और निराला ने भी इस दिशा में अपनी कलम चलाई। यहाँ तक आते-आते हिंदी उपन्यास ने मनोरंजन के स्तर से ऊपर उठकर समाज से अपना नाता जोड़ा।

प्रेमचंदोत्तर युग में हिंदी उपन्यास की कई धाराएँ प्रवाहित होने लगीं। अज्ञेय, इलाचंद जोशी और जैनेन्द्र ने हिंदी उपन्यास को मनोविश्लेषण से जोड़ा। वहीं यशपाल ने इसे यथार्थवादी धरातल पर रखते हुए उपन्यासों को प्रगतिवादी या मार्क्सवादी चेतना से संपृक्त किया। ऐतिहासिक उपन्यासकारों में हजारीप्रसाद द्विवेदी, वृंदावनलाल वर्मा, रांगेय राघव आदि के नाम लिए जा सकते हैं। वहीं आंचलिक उपन्यास लेखन की एक परिपाटी भी शुरु हुई जिसमें नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु, उदयशंकर भट्ट, भैरवप्रसाद गुप्त और राही मासूम रजा के नाम लिए जा सकते हैं। इस काल में मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, प्रयोगशील और आधुनिकता बोध जैसे विषयों को आधार बनाकर भी उपन्यास लेखन का कार्य प्रारंभ हुआ। इन विविध प्रवृत्तियों को आधार बनाकर लिखने वालों में अमृतलाल नागर, धर्मवीर भारती, राजेंद्र यादव, मोहन राकेश, श्रीलाल शुक्ल आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

बीसवीं सदी के अंतिम दशकों में उपन्यास लेखन के क्षेत्र में कई महिला उपन्यासकारों ने भी विशिष्ट ख्याति अर्जित की। महिला लेखन की भाँति दलित और आदिवासी लेखन भी सदी के आखिर दौर से चर्चा में आया। हिंदी उपन्यास की वर्तमान स्थिति पर डॉ. शिव कुमार शर्मा का मत है कि- ''आज

का हिंदी उपन्यास प्रेमचंद द्वारा प्रदर्शित स्थान से काफी आगे निकल चुका है। आज हिंदी उपन्यास साहित्य में पर्याप्त विषय वैविध्य है।''

नई सदी से चर्चित उपन्यासकारों में मैत्रेयी पुष्पा, हिमांशु जोशी, क्षमा कौल, चन्द्रकांता, शिवानी, अलका सरावगी, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, काशीनाथ सिंह, कृष्णा सोबती, गिरिराज किशोर, गीतांजलि श्री, गोविंद मिश्र, नासिरा शर्मा, पंकज बिष्ट, प्रियंवद, मधु कांकरिया, ममता कालिया, मनीषा कुलश्रेष्ठ, महीप सिंह, महुआ माजी, मिथिलेश्वर, रणेंद्र, संजीव, सुधा अरोड़ा, सुरेंद्र वर्मा, हृदयेश, रमेश चंद्र शाह, अमरकांत, मनोहर श्याम जोशी, श्रीलाल शुक्ल, अखिलेश, प्रदीप सौरभ, भगवानदास मोरवाल एवं सत्यनारायण पटेल आदि प्रमुख हैं।

वास्तव में हिंदी उपन्यास नित नई ऊँचाइयों को छू रहा है। भारतेंदु युग से प्रारंभ हुई इसकी यात्रा नित नए शिखरों पर अपना परचम लहरा रही है। समाज के हर एक वर्ग के साथ कदमताल करने वाली इस विधा ने जीवन एवं जगत की विविध समस्याओं यथा- सामाजिक, आर्थिक, वैयक्तिक, राजनीतिक एवं अन्यान्य विषयों से जुड़ी समस्याओं को अपना मान सशक्त अभिव्यक्ति दी। व्यक्ति से लेकर कबीले, गाँव, नगर, महानगर एवं राष्ट्र तथा सम्पूर्ण विश्व की पीड़ा में भागीदार रहते हुए हिंदी उपन्यासकारों ने उनके दर्द को बाँटने का प्रयास किया है। विविध राजनीतिक विषयों के साथ-साथ इन रचनाकारों ने विस्थापित परिवारों के पुनः विस्थापित होने की त्रासदी को भी अपने लेखन का विषय बनाया है। कश्मीरी हिन्दुओं एवं मुसलमानों के आपसी रिश्तों में आ रहे परिवर्तन तथा साम्प्रदायिकता एवं आतंकवाद की समस्याओं को आधार बनाकर पाठकों की संवेदना को झंकृत करने का प्रयास किया है। इसी के साथ कश्मीर के लोगों के जीवन संघर्षों के साथ-साथ आदमी-आदमी के बीच चल रहे धर्म, जाति एवं भाषा विषयक द्वंद्व को भी उजागर किया है। इस सदी के उपन्यास संवेदनशीलता की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं, साथ ही ये बदलते मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति भी करते हैं। इस सदी के रचनाकारों ने वृद्धों के प्रति युवाओं की मानसिकता को भी उजागर किया है। इन रचनाकारों ने स्त्री लेखन के हवाले से समाज में आ रहे बदलाव की सूक्ष्म अनुभूतियों को भी वाणी प्रदान की है। स्त्री पक्षों पर लेखन करते हुए इन उपन्यासकारों ने स्त्री के वैचारिक बदलाव जैसे-शारीरिक सौंदर्य को मातृत्व से अधिक महत्त्व देने की वृत्ति के साथ-साथ आजकल के समाज में दिख रही, स्वच्छंद आचरण, विरोध की भावना, समलैंगिकता और पर-पुरुषों से संबंध, स्वयं को दोषी न मानने की वृत्ति, आत्मनिर्भरता, लिव इन रिलेशनशिप आदि मुद्दों को भी प्रमुखता से उठाया है जो कि आज के जीवन में हमें दिखाई पड़ते हैं। हमारे साहित्यकारों ने समाज के हर वर्ग को ध्यान में रखकर अपनी कलम चलाई है। नई सदी के हिंदी उपन्यासों ने किसान व गरीब के हक में आवाज उठाई है तो वेश्या जीवन की वेदनापूर्ण स्थितियों को भी रेखांकित किया है। आज के समाज और परिवार में पनप रही विविध विरोधी वृत्तियों पर भी लिखा है। रिश्तों के बीच आ रही बाजारवाद की आहट भी यहाँ सुनी जा सकती है। चिकित्सकीय पेशा कैसे 'सेवा से मेवा' की ओर मुड़ गया, यह भी इनमें द्रष्टव्य है। पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति के अनुकरण के मोह में हम अपनी संस्कृति से कैसे कटते जा रहे हैं, यह भी हम यहाँ अनुभूत कर सकते हैं। इस प्रकार 21वीं सदी के उपन्यासों का फलक विस्तृत है और यह हमें नई-नई संवेदनाओं और यथार्थ से परिचित कराता है। ये आलेख 21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में कथ्य और शिल्प को लेकर आए विविध बदलावों को दर्शाते हैं।

उपन्यास के लेखन और प्रकाशन का क्रम अनवरत जारी है। 21वीं सदी के इन दो दशकों में ऐसे कई और उपन्यास जो चर्चा में आए होंगे किंतु हो सकता है कि इस पुस्तक में उन पर आलेख न आ पाए हों। सभी को एक साथ समेट पाना संभव भी नहीं है। इतना जरूर कहा जा सकता है कि इस पुस्तक में संकलित आलेख पाठकों और शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे।

यह संपादित पुस्तक वास्तव में 'समवेत' पत्रिका के विशेषांक के रूप में प्रकाशित दो अंकों के चयनित आलेखों का संग्रह है जो कि 'समवेत' के 21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों पर केंद्रित विशेषांक में प्रकाशित हो चुके हैं। 'समवेत' में प्रकाशित वे आलेख पाठकों और शोधार्थियों को पुस्तक रूप में भी मिल पाए इसी को ध्यान में रखते हुए 'समवेत' के उन दोनों अंकों के आलेखों में से चयनित आलेखों को संशोधित रूप में इस पुस्तक में प्रकाशित किया गया है।

मैं सभी आलेख लेखकों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ। आशा है वरिष्ठ जनों और मित्रों का आशीर्वाद और सहयोग हमें निरंतर मिलता रहेगा। इसी कामना के साथ।

डॉ. नवीन नंदवाना
संपादक

अनुक्रम

1. 'गिलिगडु' : वृद्धावस्था का यथार्थ 1
प्रो. वृषाली मांद्रेकर

2. 'चहीं कहीं था घर' : स्त्री होने का दंश झेलती नारी 6
डॉ. नामदेव एम. गौडा

3. 'शिगाफ' : विस्थापन, स्त्री और कश्मीर 13
डॉ. कल्पना गवली

4. 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' : 21
दृष्टिकोण की विकलांगता और बदलाव की अपेक्षा
डॉ. संजय नवले

5. काटना शमी का वृक्ष पद्मपंखुड़ी की धार से : 26
यह पथरीला दर्द काव्य का मुझ से सहा न जाता...
प्रभात कुमार मिश्र

6. 'राग विराग' : जीवन की जटिलताओं से टकराहट 44
डॉ. नवीन नंदवाना

7. 'कथा सतीसर' : आतंकवाद से जर्जर होती जिंदगी 55
का अंकन
डॉ. नयना डेलीवाला

8. 'सलाम आखिरी' : एक संवेदनशील 'कोलाज' 61
डॉ. संगम वर्मा

9. 'अन्तर्वशी' : बदलती नारी चेतना का अंकन 68
डॉ. संदीप श्रीराम पाईकराव

10. 'ए,बी,सी,डी,' : प्रवासी भारतीयों का सांस्कृतिक संकट 73
डॉ. निम्मी ए,ए

11. 'कोहरे में कैद रंग' : जीवन के विभिन्न रंगों से साक्षात्कार 79
डॉ. शबाना हबीब

12. 'तिरोहित' : मनोवैज्ञानिकता की पड़ताल 85
डॉ. हिरल शादीजा

13. 'रेत' : देह से देह की मुक्ति का सफर 91
डॉ. नीतू परिहार

14. 'रेहन पर रग्घू' : मनुष्य के अकेलेपन का बेजोड़ आख्यान 104
डॉ. आदित्य कुमार गुप्त

15. 'प्रेम की भूतकथा' : प्रणय और मृत्यु की भूल-भुलैय्या 114
डॉ. लेखा. एम

16. 'दुक्खम : सुक्खम' : एक शास्त्रीय विवेचन 120
डॉ. जय राम त्रिपाठी

17. 'मिलजुल मन' : आत्म और पर का संयोग 125
डॉ. हेना

18. 'गाँव भीतर गाँव' : ग्रामीण यथार्थ की गहन पड़ताल 133
डॉ. शशिभूषण मिश्र

19. 'गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान' : 140
अतीत के झरोखे से
डॉ. रवीन्द्र अमीन

20. 'विनायक' : 21वीं सदी के हर असिद्ध नायक के 146
जीवन का दस्तावेज
डॉ. अखिलेश चास्टा

21. 'तीसरी ताली' : हाशिए पर जीवन जीती तीसरी 153
दुनिया का सच
डॉ. मनीषा शर्मा

22. 'दस द्वारे का पींजरा' : पिंजरे से मुक्ति का संघर्ष 162
डॉ. ईश्वर सिंह चौहान

23. 'पारिजात' : गंगा-जमुनी तहजीब का दस्तावेज 175
डॉ. संतोष विजय येरावार

24. 'फाँस' : उत्तर-आधुनिक समय में किसान जीवन का महाकाव्य 181
डॉ. विनोद कुमार विश्वकर्मा

25. 'सेज पर संस्कृत' के सकारात्मक सरोकार 194
डॉ. अनीता नायर

26. 'न भूतो न भविष्यति' : विवेकानंद और वर्तमान 205
डॉ. नीता त्रिवेदी

27. 'अधबुनी रस्सी : एक परिकथा' : इक्कीसवीं शताब्दी के वितान में बीसवीं सदी की दास्तान 216
डॉ. अश्विनी कुमार शुक्ल

28. 'कैसी आगी लगाई' : विविधताओं से भरे जीवन की कलात्मक अभिव्यक्ति 222
देवेन्द्र कुमार गुप्ता

322